अलौकिक वात्सल्य की मूरत मम्मा

ब्र.कु. बृजमोहन,ब्रह्माकुमारीज
अतिरिक्त महासचिव,दिल्ली

मैं उन सौभाग्यशाली बच्चों में से हूँ जिन्होंने मातेश्वरी जी से साकार में अलौकिक स्नेह और पालना ली है। मातेश्वरी जी से मेरी पहली मुलाकात 1955 में हुई थी, तब मैं चार्टर्ड अकॉउंटेंट की पढ़ाई पढ़ रहा था और इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के दिल्ली सेवाकेन्द्र(कमला नगर) पर ईश्वरीय ज्ञान-योग की शिक्षा प्राप्त करते हुए मुझे कुछ महीने ही हुए थे। तभी अपने लौकिक माता-पिता और भाई के साथ मैं पिताश्री और मातेश्वरी जी (जिन्हें हम स्नेह से बाबा और मम्मा कहकर पुकारते हैं) से मिलने आबू पर्वत स्थित मधुबन स्वर्गाश्रम में गया था। प्रथम मिलन के समय हिस्ट्री हॉल में सामने एक सन्दली पर पिताश्री जी और दूसरी पर मातेश्वरी जी विराजमान थीं। मैंने दोनों की ओर बारी-बारी से देखा। मम्मा एक अलौकिक छवि से मुस्कुरा रही थीं। उनके मुखमण्डल से रूहानियत टपक रही थी। उनके नयनों से असीम स्नेह बरस रहा था। मम्मा का व्यक्तित्व अति प्रभावशाली और सहज ही आकर्षण करने वाला था। मुझे अच्छी तरह याद है कि उन्होंने न तो कुछ कहा था और न ही कुछ बाह्य संकेत किया था। वह तो बस बैठी हुई मुस्कुराये जा रही थीं। परन्तु उनकी उस मुस्कान में ही कुछ ऐसा जादू था कि मुझे उनकी ओर से बुलाने की स्पष्ट महसूसता हुई। मैं स्वतः ही उठा और जाकर अलौकिक माँ के पास बैठ गया। अहा! कितना तपत बुझाने वाला था उनका सान्निध्य! उसी क्षण मैंने जान लिया कि भक्तजन माँ को 'शीतला' कहकर क्यों पुकारते रहे हैं! माँ ने अपने पंख समान कोमल और कमल समान पवित्र हस्तों से मुझे प्यार की थपकी देते हुए मेरा मुख मीठा कराया था। जितने दिन मैं आबू में रहा, मैंने एक अजीब-सी उलझन महसूस की जिसका ज़िक्र मैंने आज तक किसी से भी नहीं किया है। आप सोचते होंगे कि ऐसी भी कौन-सी अनोखी उलझन हो सकती है जिसको मैंने अब तक अपने पास ही रख छोड़ा है! वह बात दरअसल यह थी कि क्लास में, 'चैम्बर' में (उन दिनों बाबा और मम्मा क्लास के बाद ज्ञान की चिट-चैट करने के लिए दूसरे कमरे में आकर बैठा करते थे, जिसको 'चैम्बर' कहते थे। 'टोली' भी मिला करती थी) या जहाँ-कहीं भी बाबा और मम्मा दोनों विराजमान होते, तो मैं इस दुविधा में पड़ जाता कि दोनों में से किससे दृष्टि लूँ और किसकी दृष्टि से वंचित रहूँ? एक ओर ज्ञानसूर्य का तेजस और प्रकाश होता तो दूसरी ओर ज्ञानचंद्रमा की चाँदनी और शीतलता होती। मैं दोनों को ही इकट्ठा प्राप्त करते रहना चाहता था। खैर, बाद में तो मैंने उसका हल निकाल लिया और दोनों से बारी-बारी से दृष्टि लेता रहता।

लौकिक माँ की भी अलौकिक माँ

यूं तो मम्मा एक युवा अवस्था की कन्या ही थीं परन्तु यज्ञमाता का कार्य सम्भालते ही उनके अन्दर ऐसा परिवर्तन आया जो कोई भी उनके सामने आता, चाहे कोई वृद्ध से भी वृद्ध व्यक्ति आता उनको उनसे स्वाभाविक तौर पर माता की ही

भासना आती थी। वैसे तो मैंने उसी दिन अपने लौकिक पिता तथा अन्य बड़ी आयु वाले बच्चों को भी उनसे 'मम्मा-मम्मा' कहकर मिलते और बरतते हुए देखा था परन्तु इसका एक और अनोखा अनुभव होना अभी बाक़ी था। गुरुवार के दिन मधुबन आश्रम से ध्यानावस्था में जाकर शिव बाबा के पास भोग ले जाने वाली 'सन्देशी' शारीरिक नाते से मम्मा की लौकिक माता थीं। उस लौकिक माता को अपनी ही लौकिक बच्ची को अपनी 'अलौकिक माँ' के सम्बन्ध से और मम्मा को उसके साथ 'अलौकिक बच्ची' के सम्बन्ध से व्यवहार करते देखा, तो देखता ही रह गया! पहली बार जब मैंने इस दृश्य को देखा तो मेरे रोमांच खड़े हो गये थे। मम्मा के सामने उनकी लौकिक माता वृद्धा होने के बावजूद भी सचमुच उनकी बच्ची के समान ही लग रही थीं। किस प्रकार संस्कार, स्वभाव और कर्त्तव्य के बदल जाने से मनुष्यात्मा का सारा वातावरण तथा उसके सारे सम्बन्ध ही बदल जाते हैं, इस सत्यता की छाप मुझ पर उसी घड़ी लग गयी थी। मैं सौभाग्यशाली था कि मेरा भी सारा ही लौकिक परिवार ज्ञानमार्ग में चल पड़ा था। उस क्षण के अनुभव से 'लौकिक' नातों को 'अलौकिक' में परिवर्तित करने में मुझे बड़ी मदद मिली थी।

एक सम्पूर्ण मातृदेवी

मम्मा दिव्यगुणों की सम्पूर्ण साक्षात् देवी थीं। उनके संकल्प चट्टान की तरह अडिग, बोल मीठे तथा सारयुक्त और कर्म श्रेष्ठ तथा युक्तियुक्त थे। मम्मा इतनी योगयुक्त, गम्भीर और शान्त रहती थीं कि उनके आस-पास के वातावरण में सन्नाटा छाया रहता था जो सभी को प्रत्यक्ष महसूस होता था। ऐसा लगता था कि मानो वह कोई चलता-फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस हो। मम्मा की चाल फ़रिश्तों जैसी थी। यज्ञ के भाई-बहनों को पता भी नहीं चलता था कि कब मम्मा उनके पास से गुजर गयीं अथवा कब से वह उनके पीछे खड़ी हुई उनकी एक्टिविटी का निरीक्षण कर रही थीं। मम्मा के बोल बहुत ही मधुर, स्नेहयुक्त और सम्मान-पूर्ण होते थे। मम्मा ने मुझे सदा 'बृजमोहन जी' कहकर बुलाया। पत्र में वह मुझे सदा 'लाडले बृजमोहन जी' लिखती थीं। पत्र द्वारा या व्यक्तिगत मिलने पर वह सबसे पहले शारीरिक तबीयत का हाल-चाल अवश्य पूछती थीं। उस अलौकिक माता का बच्चों से जितना असीम प्यार था उतना किसी लौकिक माता का क्या होगा? मुझे तो ऐसे लगने लगा था कि जैसे कि मेरी लौकिक माँ भी मम्मा ही हैं।

कौन निर्धारित करता हमारा जन्म और मृत्यु

- ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ
राजयोग प्रशिक्षिका

प्रश्न : दीदी जी जन्म अगर हमारे कर्मों से डिसाइड होते हैं तो फिर डेथ जो होती है चाहे नैचुरल डैथ, चाहे बीमारी से या फिर किसी भी रीति से तो वो कौन डिसाइड करता है?

उत्तर : ऐसा है कि साइंस का एक रिसर्च हुआ है कि जो लोगों को पास्ट लाइफ रिग्रेशन में ले जाते हैं और जिनको भी हिप्नोटाइज़ करके पास्ट लाइफ में ले गये तो अमेरिका के अन्दर लगभग सवा लाख भाई-बहनों को पास्ट लाइफ में ले गए। और जब ले करके उनको कुछ सेटअप क्वेश्चन पूछे, उसमें मैजोरिटी से पूछा गया कि जब शरीर छोड़ा तो आप कहाँ गये थे? भगवान नाम की कोई चीज़ है? और क्या आप भगवान से मिले? और उसने क्या कहा? क्या वो आपके जन्मों को डिसाइड करते हैं? ऐसे उन सबसे सवाल पूछे गए। और मैजोरिटी लोगों का जो उत्तर आया, उससे ये कर्म फिलॉसफी को समझना हमारे लिए और आसान हो जाता है। क्योंकि मैजोरिटी ने ये कहा कि जब हमने शरीर छोड़ा चाहे नैचुरल डेथ है या एक्सीडेंटल डैथ है जिस भी तरीके से। ये शरीर छोड़ने के बाद हम एकदम हल्के होकर जाते हैं ऊपर। वहाँ एक लाइट से मिलते हैं और वो लाइट बहुत पावरफुल होती है। उस लाइट से बहुत प्रेम प्राप्त होता है, शायद वही भगवान होगा। क्योंकि इतना प्यार देने वाला और कोई नहीं होता। हमें इतना प्यार मिलता है ऐसा लगता है जैसे एक फाउंटेन में हम नहा रहे हैं। और उस प्रेम में नहाकर आत्मा शुद्ध हो रही होती है। फिर उनसे पूछा गया कि क्या फिर परमात्मा आपके कर्मों का दण्ड देता है, सजा देता है, क्या करता है? तो कहा कि नहीं वो कुछ नहीं करते, वो तो प्रेम ही बरसाते रहते हैं। लेकिन जब हम शुद्ध हो जाते हैं तो उसके बाद सारी लाइफ एक फिल्म की रील की तरह हमारे सामने से गुज़रने लगती है। बचपन से लेकर हमने कैसे कर्म किए, कहाँ-कहाँ से गुज़रे, क्या-क्या किया। एक-एक दृश्य हमारे सामने आता है। जैसे-जैसे हम दृश्य देखते जाते हैं और जो बुरा कर्म हमने किया होता है, क्योंकि उस वक्त आत्मा शुद्ध अवस्था में होती है, इसीलिए जब हम अपने ही बुरे कर्मों को देखते हैं तो इतनी ग्लानि महसूस होती है, इतना पश्चाताप महसूस होता है कि क्या ये मेरे कर्म हैं, ऐसे-ऐसे कर्म किए मैंने, इतने लोगों को दुःख दिया, इतने लोगों को कष्ट दिया। और फिर अन्दर से आता है कि जिन-जिन लोगों को हमने दुःख दिया, कष्ट दिया, तकलीफें दी उसके साथ जाकर हम अपना अकाउंट सैटल कर लें।

और इस ख्याल से हम वहाँ से वापस आते हैं, वहाँ से आना नहीं चाहते हैं बस यही चाहते हैं कि परमात्मा के सानिध्य में ही रहें और इस प्यार में नहाते रहें। इस प्रेम की अनुभूति में रहें। लेकिन जिस-जिस के साथ, जो-जो हमने बुरे कर्म किए हैं, बुरे कर्मों का हम सोचते हैं कि फिर आराम से आ जाएं ईश्वर के सानिध्य में। इसलिए हम वापस आते हैं पृथ्वी पर। और फिर पृथ्वी पर हम डिसाइड करते हैं कि कहाँ हमें जन्म लेना है, उस माँ-बाप का चयन करते हैं और हम ये डिसाइड करते हैं कि इस कर्म का फल हम कैसे भोगेंगे। ये हम खुद डिसाइड करते हैं। इस कर्म का फल भोगने के लिए ये होनी, होनी ज़रूर है। ये कहा जाता है न कि होनी को कोई टाल नहीं सकता, क्योंकि वो होनी फिक्स की गई है। तो उस कर्म के कारण हम होनी को फिक्स करते हैं। कि ये होनी होगी और इससे मेरा ये अकाउंट क्लीयर होगा।

तो उस होनी को हम फाइनल करते हैं। उसके बाद ये भी फानइल करते हैं कि इस कार्मिक अकाउंट को सैटल करने के लिए मुझे कितने साल चाहिए। तो आयुष्य भी फाइनल करते हैं कि पंद्रह साल में मेरा ये सारा अकाउंट क्लीयर हो जायेगा। पच्चीस साल चाहिए या पचास साल, इतने अकाउंट को क्लीयर करने के लिए। वो सारी डेस्टिनी को हम फाइनलाइज़ करते हैं, जो-जो सम्भव है। बाकी की हम दूसरे, तीसरे जन्म के लिए छोड़ देते हैं।

तो हम ही माँ-बाप को फाइनलाइज़ करते हैं, होनी को फाइनलाइज़ करते हैं, आयुष्य फाइनलाइज़ करते हैं क्योंकि उस समय हमें किसी से अटैचमेंट नहीं होता। और हम ये भी फाइनलाइज़ करते हैं कि हमारी मृत्यु का कारण क्या होगा। अगर हम पंद्रह साल डिसाइड करते हैं तो पंद्रह साल के बाद ऐसा क्या होगा जो छोड़ करके फिर मैं वापस भगवान के पास आ जाऊंगा। और इस प्रेम की गंगा में नहाता रहूँ। उसके सानिध्य का सुख प्राप्त करूं। और इसीलिए उस डैथ का कारण भी मैं ही फाइनलाइज़ करता हूँ। ये सब फाइनलाइज़ करने के बाद मैं जन्म लेता हूँ। तो जन्म और मृत्यु को कोई टाल नहीं सकता। दूसरा जो जीवन साथी है, उस जीवन साथी का चयन भी हमने खुद किया है, क्योंकि उसके साथ जो अकाउंट है उसे सैटल करने के लिए।

इसीलिए ये सबकुछ हमारे द्वारा ही फाइनलाइज़ होता है। भगवान का इसमें कहीं भी हाथ नहीं है। अपने कर्म के आधार से ही जब फाइनलाइज़

- शेष पेज 6 पर

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।